Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University, Solapur

Examination M.A.II (Sem.-IV)

Subject-Sanskrit

Title of Paper-DSE -4-4 योगदर्शनम्

अभ्यासप्रश्नाः

प्रश्न- 2 टिप्पण्यः लिखत ।

1. तपज समाधि।
2. जलज समाधि।
3. शुक्ल अशुक्ल कर्म।
4. योगदर्शन एवं धर्म।
5. अनागत धर्म क्या हैं।
6. परमात्मा लक्षण।
7. स्वकर्त्तव्यं तपः।
8. व्याधि, स्त्यान व संशय।
9. रेचक, पूरक, कुम्भक व्याख्या।
10. अस्मिता।
11. राग।
12. अभिनिवेश।
13. स्थिरसुखमासनम्।
14. देशबन्धश्चित्तस्य0।
15. धौति।
16. कपालभाति।
17. चित्त एवं क्षिप्त अवस्था।
18. निरुद्धावस्था।
19. शेषवत्।
20. पूर्ववत्।
21. सामान्यतोदृष्ट।
22. योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।
23. विपर्ययोमिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम्।
24. अनुभूतविषयासम्प्रमोषः स्मृतिः।
25. सत्य एवं अस्तेय।
26. अहिंसा।
27. 10 जप।
28. तस्य वाचकः प्रणवः।
29. जातिदेशकालपरिचयः।
30. कैवल्यपाद स्वरुपम्।

प्रश्न-3. संक्षिप्तं उत्तरं देयम्।

1. तत्र स्थितौ यत्नोऽभ्यासः।
2. अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोधः।
3. तत्र ध्यानजमनाशयम्।
4. न तत्स्वाभासं दृश्यत्वात्।
5. हानमेषां क्लेशवदुक्तम्।
6. तदा द्रष्टुस्वरुपेवस्थानम्।
7. ततः क्लेशकर्मनिवृत्तिः।
8. एकसमये चोभयानवधारणम्।
9. तासामनादित्वं चाशिषो नित्यत्वात्।
10. अभावप्रत्ययालंबना वृत्तिर्निद्रा।
11. जात्यन्तरपरिणामः प्रकृत्यापूरात्।
12. प्रवृत्तिभेदे प्रयोजकं चित्तमेकमनेकेषाम्।
13. ईश्वरप्रणिधानाद्वा।
14. हेयं दुःखमनागतम्।
15. ऋतम्भरा तत्र प्रज्ञा।
16. वीतरागविषयं वा चित्तम्।
17. तस्यापि निरोधे सर्वनिरोधात् निर्बीजः समाधि।
18. तीव्रसंवेगामासन्नः।
19. तस्य वाचकः प्रणवः।
20. संतोषादनुत्तमलाभः।

प्रश्न-4 विस्तृतं उत्तरं देयम्।

1. वितर्कानुगत समाधिचे वर्णन करा।
2. विचारानुगत अवस्थेचे सूत्र लिहून व्याख्या करा।
3. निद्रा म्हणजे काय योगदर्शनानुसार ससूत्र स्पष्ट करा।
4. कर्मानुसार जीव कस शरीर धारण करतो हे ससूत्र स्पष्ट करा।
5. स्थितयोगिचे कर्म कसे असावेत हे ससूत्र व्याख्या करा।

6. अतीत व अनागत धर्माचे भेद सविस्तर स्पष्ट करा।

7. विपर्यय म्हणजे काय हे योगदर्शनानुसार ससूत्र वर्णन करा।

8. स्वाध्याय शब्दाचा अर्थ लिहून त्याचे स्पष्टीकरण करा।

9. अस्मिता आणि अभिनिवेश अवस्थेत अन्तर स्पष्ट करा।

10. योग आणि योगपरंपरेचे सविस्तर वर्णन करा।

प्रश्न-5 सविस्तर उत्तरे लिहा.

1. अष्टांगयोगाचे लाभ सविस्तर लिहा.

2. योगदर्शनकारः कति पदार्थान् स्वीकरोति इति वर्णयत।

3. योगदर्शनाच्या कैवल्य पादाचे सविस्तर सार लिहा.

4. सगुण आणि निर्गुण जपाचे सविस्तर वर्णन करा.

5. कपालभाति आणि भस्त्रिका प्राणायामाचे विधि एवं लाभ लिहा.

Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University, Solapur

Examination M.A.I (Sem.-II)

Subject-Sanskrit

Title of Paper-HCT -2.2 मुद्राराक्षसम्

अभ्यासप्रश्नाः

प्रश्न-1 टिप्पण्यः लिखत।

1. पात्रपरिचयः।
2. वैरोचकः।
3. वज्रलोमनः।
4. कालपाशिकः।
5. दण्डपाशिकः।
6. शिखरसेनः।
7. जाजलि।
8. राजा नन्द।
9. कुटुम्बिनी।
10. छन्दः।
11. नाटकम्।
12. नायकः।
13. नायिका।
14. रसाः।
15. वीररसः।
16. राजनीतिपरकनाटकम्।
17. राज्यशक्तिः।
18. इन्दुशर्मा।
19. मुद्राराक्षसम्।
20. चणकः।
21. सिंहबल।
22. प्रियंवदकः।
23. दारुवर्मा।
24. दौवारिक।
25. सिंहनाद।
26. पुष्कराक्ष।
27. सिन्धुषेणः।
28. चित्रवर्मा।
29. मेघाक्ष।
30. स्रग्धरा।

प्रश्न-2 संक्षिप्तं उत्तरं देयम्। स्पष्टीकरणं कुरुत।

1. गुणवत्युपानिलये स्थितिहेतोः त्रिवर्गस्य साधिके' इति ससन्दर्भं स्पष्टं कुरुत।
2. रक्षत्येनं तु बुधयोगः।
3. कः शालभेनविधिना लभतां विनाशम्।
4. भक्त्या कार्यधुरां वहन्ति बहवस्ते दुर्लभास्त्वादृशाः।
5. त्यजत्यप्रियवत्प्राणान्यथा तस्यायमापदि।
6. कामं नन्दमिव प्रमथ्य जरया चाणक्यनीत्या यथा।
7. पीत्वा निरवशेषं कुसुमरसमात्मनः कुशलतया।
8. वामां बाहुलतां निवेश्य शिथिलं कण्ठे निवृत्तानना।
9. त्यक्त्वा मृत्युभयं प्रहर्त्तुमनसः शत्रोर्बले दुर्बले।
10. कन्या तस्य बधाय या विषमयी गूढं प्रयुक्ता मया।
11. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः।
12. किं शेषस्य भरण्यथा न वपुषि क्ष्मां न क्षिपत्येव यत्।
13. परिहृतमयशः पातितमस्मासु च घातितोर्द्धराज्यहरः।
14. सर्वः सर्वं न जानाति।
15. प्रारब्धमुत्तमगुणा न परित्यजन्ति।
16. मौर्यस्यैव फलन्ति पश्य विविधश्रेयांसि मन्नीतयः।
17. प्राकारं परितः शरासनधरैः क्षिप्रं परिक्रम्यतां।
18. सुगांगे हेमांकं नृवर तव सिंहासनमिदम्।
19. इष्टात्मजः सपदि सान्वय एवं देवः।
20. कौटिल्यः कुटिलमतिः स एष येन।

प्रश्न-3 विस्तृतं उत्तरं देयम्।

1. राक्षसस्य मुख्यमित्रस्य परिचयं लिखत।
2. त्रिविधमंगलाचरणस्य वर्णनं कुरुत।
3. मुद्राराक्षसस्य उपजीव्यम् किं का तत्र कथा इति सविस्तरं वर्णयत।
4. मुद्राराक्षस एव नाम कथं अभुत् इति वर्णयत।
5. मुद्राराक्षसनाटके प्रयुक्तस्य नाटकसन्धेः वर्णनं कुरुत।
6. मुद्राराक्षसस्य पर्यावरणीयदीशा समीक्षां कुरुत।
7. मुद्राराक्षसे प्रयुक्तस्य दार्शनीकचिन्तनस्य वर्णनं कुरुत।
8. मुद्राराक्षसे प्रयुक्तस्य मित्रत्वभावस्य वर्णनं वर्णयत।
9. मुद्राराक्षसानुसारं दण्डविधानस्य वर्णनं कुरुत।
10. चाणक्यकालील सामाजिक व्यवस्थायाः वर्णनं कुरुत।

प्रश्न-4 सविस्तरं उत्तरं देयम्।

1. मुद्राराक्षसे मुख्यरुपेण प्रयुक्तार्थालंकारस्य वर्णनं कुरुत।
2. राक्षस विचार अंकस्य सारं लिखत।
3. मुद्राराक्षसस्य राजनीतिपरकं वर्णनं कुरुत।
4. मुद्राराक्षसनाटकस्य रसग्रहणं कुरुत।
5. कृतककलह-अंकस्य सस्तिरं सारं लिखत।

Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University, Solapur

Examination M.A.II (Sem.-IV)

Subject-Sanskrit

Title of Paper-HCT -4-3 संस्कृतवांगमयेतिहासः

अभ्यासप्रश्नाः

प्रश्न. 2 टिप्पण्यः लिखत ।

1. महीदास।
2. ज्योतिष्।
3. व्याकरण।
4. नीतिमंजरी।
5. कल्प।
6. आरण्यक।
7. अरविन्द।
8. विल्सन।
9. ग्रासमान।
10. रसयोजना।
11. रत्नाकर।
12. हरविजय।
13. अभिनन्द।
14. सेतुबन्ध।
15. शिवराजविजयम्।
16. कल्हण।
17. पृथ्वीराजविजयम्।
18. अमरुशतकम्।
19. भल्लटशतकम्।
20. बिल्हण।
21. भट्टाचार्य।
22. बृहत्कथामंजरी।
23. क्षमाराव।
24. विभाव।
25. अनुभाव।
26. भरतवाक्य।

27. मुरारी।

28. वत्सराज।

29. शक्तिभद्र।

30. पाणिनि।

प्रश्न-2 संक्षिप्तं उत्तरं देयम्।

1. नाट्यशास्त्रानुसारं 'प्रहसनस्य' सविस्तरं वर्णनं कुरुत।
2. आचार्य मम्मटस्य जीवनपरिचयं लिखत।
3. आर्षकाव्यं किम् इति वर्णयत।
4. वेदेषु विज्ञानम् इति विषयमधिकृत्य स्वविचारान् स्पष्टं कुरुत।
5. भारवेः अर्थ गौरवम् इति प्रतिपादयत।
6. दण्डिनः पदलालित्यम् इति सविस्तरं वर्णयत।
7. महाभाष्यकारस्य संक्षिप्तं परिचयं लेख्यम्।
8. हेतुर्निर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः' इति सायणानुसारं स्पष्टं कुरुत।
9. 'ब्राह्मण' शब्दस्य अर्थः ग्रन्थानुसारं प्रतिपादयत।
10. इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोः अलौकिकं उपायं वेदयति सः वेदः' इति वर्णयत।
11. अरण्येऽध्ययनाद् आरण्यकमित्युदीर्यते। इति स्वदृष्ट्या प्रतिपादनीयः।
12. सौन्दरनन्दमहाकाव्यस्य परिचयं लिखत।
13. ऋतुसंहारमहाकाव्यस्य संक्षिप्तं परिचयं लिखत।
14. जयदेवकवेः जीवनपरिचयं लिखत।
15. अथर्ववेदस्य गोपथब्राह्मणस्य संक्षिप्तं परिचयं लिखत।
16. दशकुमारचरितकाव्यस्य सारं वर्णयत।

17. कैशिकीवृत्तेः लक्षणं लिखित्वा व्याख्यां कुरुत।

18. छायानाटकस्य सिद्धान्तस्य वर्णनं कुरुत।

19. बालरामायणस्य परिचयं लिखत।

20. बालभारतस्य संक्षिप्तं परिचयं लिखत।

प्रश्न-3 विस्तृतं उत्तरं देयम्।

1. राजतरंगिणीकाव्यस्य सामान्यं परिचयं देयम्।

2. भाष्यकार-ओल्डनवर्गस्य सामान्यं परिचयं लिखत।

3. भारतीयप्राचीनपद्धत्तेः वर्णनं कुरुत।

4. संस्कृतस्य वाग्व्यवहारविषये स्वविचारान् प्रतिपादयत।

5. भारतीयनाट्यवृत्तेः वर्णनं कुरुत।

6. सात्वतीवृत्तेः परिभाषां लिखित्वा व्याख्यां कुरुत।

7. भट्टनारायणस्य जीवनवर्णनं वर्णयत।

8. व्याकरणशास्त्रस्य सामान्यं परिचयं लिखत।

9. भर्तृहरिशतककाव्यस्य सामान्यपरिचयं लिखत।

10. राजशेखरकवेः संक्षिप्तं जीवनपरिचयं लिखत।

प्रश्न-4 सविस्तृतं उत्तरं देयम्।

1. संस्कृत भाषा का उद्भव एवं विकास लिखें।
2. लोककथा एवं नीतिकथा में क्या अन्तर है स्पष्ट करें।
3. रुपकरसयोः कः अन्तरः?
4. नाट्यशास्त्रानुसारं अर्थप्रकृतेः वर्णनं कुरुत।
5. गीतिकाव्यस्य लक्षणं स्वरुपं च सविस्तरं वर्णयत।

Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University, Solapur
Examination M.A.I (Sem.-II)
Subject-Sanskrit
Title of Paper-SCT -2.2 निरुक्तम्

अभ्यासप्रश्नाः

प्रश्न-1 टिप्पण्यः लिखत ।

1. निर्वचनम्।
2. उपधाविकारः।
3. अन्तव्यापत्तिः।
4. तद्धित।
5. निरुक्त पठन अधिकारी।
6. पृथिवी।
7. क्रियावाची शब्द।
8. इव।
9. वा।
10. शाकटायन।
11. उपधालोप।
12. शब्दप्रवृत्ति एक समीक्षा।
13. कृदन्त।
14. जलम्।
15. चकारः।
16. जायते।
17. निरुक्तार्थः।
18. विशयवत्यो वृत्तयः।
19. वर्णलोपद्विवर्णलोपयोः को अन्तरः।
20. निर्वचन एवं लोकभाषा।
21. दुर्गाचार्यः।
22. गौ।
23. विद्यापठनाधिकारी।
24. हिरण्यम्।
25. विश्वामित्रनदी संवादः।
26. नकारव्याख्या।
27. उत्शब्दव्याख्या।
28. विपरिणमते।
29. सीमन्शब्दव्याख्या।
30. ऋत्विक्।

प्रश्न-2. संक्षिप्तं उत्तरं देयम्।

1. स्वानुसारं पंचोपसर्गाणां नामानि लिखित्वा तेषां व्याख्या कार्याः।
2. उच्चावचाः पदार्थाः भवन्ति इति गाग्र्यः' इति उक्तिः स्पष्टं कुरुत।
3. वर्धत इति स्वांगाभ्युच्चयं सयंयौगिकानां वार्थानां वर्धते विजयनेति वा वर्धते शरीरेणेति वा, इतिस्पष्टीयत।

4. इन्द्रियनित्यं वचनमौदुम्बरायणः ससन्दर्भं स्पष्टं कुरुत।
5. अद इति सत्वानामुपदेशः इति स्पष्टं कुरुत।
6. आख्यात के दश भेद लिखिकर उनका परिचय लिखें ।
7. उपसर्गाणां नामानि लिखत।
8. सकर्मणि एवं अकर्मणि को भेदः इति स्पष्टीयत।
9. परस्पैपद एवं आत्मनेपद में क्या भेद स्पष्ट करें।
10. चिदित्येषोऽनेक कर्माचार्यश्चिदिदं ब्रूयादिति पूजायाम् इति यास्कस्य पंक्तिं स्पष्टं कुरुत।
11. वृक्षस्य नू ते पुरुहूत वयाः इति ससन्दर्भं स्पष्टं कुरुत।
12. वायुर्वा त्वा मनुर्वा त्वा इति स्पष्टं कुरुत।
13. अव्यय शब्दाचे स्वरुप श्लोकसहित लिहा.
14. मन्त्राः अनर्थकाः इति कस्य मतम् सविस्तरं लिखत।
15. निरुक्तस्य प्रथम प्रयोजनं किम् इति सविस्तरं लिखत।
16. मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः' इति ससन्दर्भं स्पष्टं कुरुत।
17. तद्धितपदानां निर्वचन पद्धति का अस्ति इति वर्णयत।
18. रश्मिनां नामानि लिखत्वा तेषां वर्णनं कुरुत।
19. सर्वेऽपि रश्मयो गाव उच्यन्ते इति स्पष्टं कुरुत।
20. प्रथमाध्याये वर्णितानां आचार्याणां नामोल्लेखं कुरुत।

प्रश्न-3 विस्तृतं उत्तरं देयम्।

1. यास्ककृत निरुक्तस्य सविस्तरं परिचयं लिखत।
2. निरुक्तस्य प्रथमाध्ययस्य सारं लिखत।
3. रात्रिवाचक शब्दानां नामानि लिखित्वा परिचयं लिखत।
4. नदीवाचक शब्दानां नामानि लिखित्वा तेषां सामान्यं परिचयं लिखत।
5. उषावाचक शब्दानां नामानि लिखित्वा तेषां सामान्यं परिचयं लिखत।
6. चत्वारि श्रृंगा त्रयोऽस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासोऽस्य' इति व्याख्येयम्।
7. निरुक्तस्य द्वितीयाध्यायस्य प्रतिपाद्यविषयं प्रतिपादयत।
8. निघण्टु शब्दाविषयी शाकटायनाचे मत लिहा.

9. निरुक्तानुसारं भाषायाः उपयोगिता इति सविस्तरं लिखत।

10. विनश्यति इति निरुक्तानुसारं वर्णयत।

प्रश्न-4 सविस्तरं उत्तरं देयम्।

1. आचार्य दुर्गस्य अनुसारं निरुक्तस्य आकारं वर्णयत।

2. आचार्य स्कन्दस्वामिनः अनुसारं निरुक्तस्य आकारं वर्णयत।

3. भावविकारविषये आलोचकानां प्रथममतसमीक्षायाः वर्णनं कुरुत।

4. निरुक्तानुसारं विश्वामित्रस्य नद्याः कृते कृता प्रार्थना तस्य वर्णनं कुरुत।

5. अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम् इति सविस्तरं वर्णयत।